eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

गुप्तकालीन चित्रकलाः सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और कलात्मक विकास

डॉ श्वेता शर्मा[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर –इतिहास, मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय, गाजियाबाद उ0प्र0

Received: 21 April 2026 Accepted & Reviewed: 25 April 2026, Published: 30 April 2026

Abstract

भारतीय कला इतिहास में गुप्तकाल को सांस्कृतिक और कलात्मक उत्कर्ष का युग माना जाता है। इस काल में चित्रकला ने अत्यंत परिष्कृत एवं परिपक्व स्वरूप धारण किया। गुप्तकालीन चित्रकला केवल सौंदर्य प्रदर्शन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें धार्मिक चेतना, सामाजिक जीवन, मानवीय भावनाएँ तथा आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। विशेष रूप से अजंता की गुफाओं में निर्मित चित्र इस काल की चित्रकला की उत्कृष्टता के प्रतीक हैं। इन चित्रों में बौद्ध धर्म, जातक कथाओं, राजदरबार, नृत्य–संगीत, स्त्री सौंदर्य, प्रकृति और मानवीय संबंधों का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य गुप्तकालीन चित्रकला की उत्पत्ति, विकास, प्रमुख विशेषताएँ, तकनीक, विषय–वस्तु, धार्मिक प्रभाव तथा सांस्कृतिक महत्ता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। यह शोध यह स्पष्ट करता है कि गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय सभ्यता के सौंदर्यबोध और आध्यात्मिक चिंतन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

मुख्य शब्द– गुप्तकाल, चित्रकला, अजंता गुफाएँ, भारतीय कला, बौद्ध चित्रकला, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक प्रभाव

Introduction

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) को कला, साहित्य, धर्म और संस्कृति का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में भारतीय कला के विभिन्न रूपों, मूर्तिकला, वास्तुकला, धातुकला और चित्रकला, ने अत्यधिक प्रगति की। गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय चित्र परंपरा का उच्चतम रूप मानी जाती है। यह चित्रकला केवल सजावट का माध्यम नहीं थी, बल्कि समाज की धार्मिक भावना, सांस्कृतिक मूल्य और जीवन शैली को व्यक्त करने का माध्यम भी थी। चित्रकला मानव सभ्यता की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में से एक है। प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर मंदिरों और गुफाओं की भित्तिचित्र परंपरा तक भारतीय चित्रकला ने लंबी यात्रा तय की। गुप्तकाल में यह कला अपनी परिपक्व अवस्था तक पहुँची। गुप्तकालीन चित्रों में रंगों का संतुलन, आकृतियों की कोमलता, भावनात्मक अभिव्यक्ति और धार्मिक आदर्शवाद का अद्भुत संयोजन मिलता है।

गुप्तकालीन चित्रकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण महाराष्ट्र स्थित अजंता गुफाओं में देखा जा सकता है। अजंता की भित्तिचित्र कला न केवल भारत में, बल्कि विश्व कला इतिहास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इन चित्रों में धार्मिक कथाएँ, जातक प्रसंग, मानव संबंध, दरबारी जीवन तथा प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

यह शोध–पत्र गुप्तकालीन चित्रकला की पृष्ठभूमि, विकास, विशेषताओं, तकनीक, विषय–वस्तु तथा प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध के उद्देश्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

1. गुप्तकालीन चित्रकला की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन करना।
2. गुप्तकालीन चित्रकला की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. अजंता चित्रकला की कलात्मकता और तकनीक को समझना।
4. चित्रकला पर धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन करना।
5. भारतीय कला इतिहास में गुप्तकालीन चित्रकला के योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति – यह शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें इतिहास, कला और संस्कृति संबंधी पुस्तकों, शोध–पत्रों, प्राचीन अभिलेखों तथा कला इतिहास से संबंधित सामग्री का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक, तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

गुप्तकालीन चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– गुप्त साम्राज्य भारतीय इतिहास में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि का काल था। इस स्थिरता ने कला और संस्कृति को संरक्षण दिया। गुप्त शासकों ने कलाकारों, विद्वानों और धार्मिक संस्थानों को संरक्षण प्रदान किया। इस कारण कला का विकास केवल शाही स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि धार्मिक संस्थाओं और समाज में भी इसका प्रसार हुआ। गुप्तकाल में धर्म और कला का गहरा संबंध था। बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म और जैन धर्म ने कलाकारों को प्रेरित किया। धार्मिक स्थलों, गुफाओं और विहारों को चित्रों से सजाया जाने लगा। इन चित्रों का उद्देश्य केवल सजावट नहीं, बल्कि धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक संदेश देना भी था। चित्रकला का प्रयोग धार्मिक कथाओं को आम जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता था। उस समय अधिकांश लोग पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे, इसलिए चित्रों के माध्यम से धार्मिक संदेश सरलता से समझाए जाते थे।

गुप्तकालीन चित्रकला का विकास– गुप्तकालीन चित्रकला का विकास पूर्ववर्ती परंपराओं से हुआ। मौर्यकाल, शुंगकाल और कुषाणकाल मेंप चित्रकला की नींव रखी गई थी। गुप्तकाल में यह परंपरा विकसित होकर परिष्कृत रूप में सामने आई। चित्रकला मुख्यतः गुफाओं, विहारों और मंदिरों की दीवारों पर बनाई जाती थी। इस काल में भित्तिचित्र का विकास हुआ। भित्तिचित्रों में धार्मिक कथाएँ, मानव आकृतियाँ, प्राकृतिक दृश्य और सामाजिक जीवन चित्रित किए जाते थे। गुप्तकालीन चित्रकला की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसमें सौंदर्य और आध्यात्मिकता का संतुलित मिश्रण दिखाई देता है। कलाकारों ने चित्रों में केवल बाहरी रूप नहीं, बल्कि आंतरिक भावनाओं को भी व्यक्त किया।

गुप्तकालीन चित्रकला के प्रमुख केंद्र–

1. अजंता गुफाएँ– अजंता गुफाएँ महाराष्ट्र में स्थित हैं और गुप्तकालीन चित्रकला का सर्वोच्च उदाहरण मानी जाती हैं। इन गुफाओं का निर्माण दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर छठी शताब्दी ईस्वी तक हुआ। अजंता की गुफाओं में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र बनाए गए हैं। इन चित्रों में बुद्ध के जीवन, जातक कथाओं और बोधिसत्वों का चित्रण मिलता है।

2. बाघ गुफाएँ– मध्य प्रदेश में स्थित बाघ गुफाएँ भी गुप्तकालीन चित्रकला का महत्वपूर्ण केंद्र हैं। यहाँ की चित्रकला अजंता शैली से प्रभावित है। बाघ गुफाओं में मानव आकृतियों की स्पष्टता और भावनात्मक अभिव्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

3. बादामी गुफाएँ– दक्षिण भारत की बादामी गुफाओं में भी गुप्तकालीन चित्र परंपरा का प्रभाव देखा जा सकता है।

अजंता चित्रकला का विश्लेषण– अजंता की चित्रकला गुप्तकालीन कला का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। यह चित्रकला धार्मिकता, भावनात्मकता और तकनीकी दक्षता का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है।

अजंता चित्रकला की विशेषताएँ

1. भावनात्मक अभिव्यक्ति– अजंता चित्रों में मानव चेहरों और मुद्राओं के माध्यम से भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

2. प्राकृतिक रंगों का प्रयोग– चित्रों में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया, जैसेकृलाल, पीला, हरा, नीला और सफेद।

3. रेखाओं की कोमलता– चित्रों में रेखाएँ अत्यंत मृदु और संतुलित हैं।

4. मानवीय संबंधों का चित्रण– चित्रों में राजा, रानी, सेवक, साधु और सामान्य लोगों का चित्रण मिलता है।

5. धार्मिक कथाओं का चित्रण– जातक कथाएँ और बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाएँ प्रमुख विषय हैं।

गुप्तकालीन चित्रकला की तकनीक– गुप्तकालीन चित्रकला में विशेष तकनीकों का उपयोग किया जाता था।

1. भित्तिचित्र तकनीक

दीवारों पर प्लास्टर लगाकर चित्र बनाए जाते थे।

2. रंगों की तैयारी

रंग प्राकृतिक पदार्थों से बनाए जाते थे।

- लाल रंग – गेरू मिट्टी से
- पीला रंग – हरताल से
- सफेद रंग – चूने से
- काला रंग – कोयले से

3. सतह की तैयारी

दीवारों पर पहले मिट्टी और चूने का लेप लगाया जाता था।

4. रेखांकन

पहले चित्र की रूपरेखा बनाई जाती थी, उसके बाद रंग भरे जाते थे।

गुप्तकालीन चित्रकला की विषय–वस्तु– गुप्तकालीन चित्रकला की विषय–वस्तु अत्यंत विविध थी।

धार्मिक विषय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

1. बुद्ध के जीवन की घटनाएँ
2. जातक कथाएँ
3. बोधिसत्वों का चित्रण
4. धार्मिक अनुष्ठान

सामाजिक विषय

1. राजदरबार
2. संगीत और नृत्य
3. स्त्रियों की सजावट
4. वस्त्र और आभूषण

प्राकृतिक विषय

1. पेड़–पौधे
2. पशु–पक्षी
3. नदियाँ और पहाड़
4. उद्यान और फूल

गुप्तकालीन चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ

1. आध्यात्मिकता की प्रधानता
2. मानव भावनाओं का चित्रण
3. रंगों का संतुलित प्रयोग
4. आकृतियों की कोमलता
5. धार्मिक विषयों की अधिकता
6. सौंदर्य और यथार्थ का समन्वय
7. स्त्री सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण
8. सामाजिक जीवन का प्रस्तुतीकरण

गुप्तकालीन चित्रकला और धर्म– गुप्तकालीन चित्रकला पर धर्म का गहरा प्रभाव था। बौद्ध धर्म ने चित्रकला को विशेष प्रेरणा दी। चित्रों का उपयोग धार्मिक शिक्षा देने के लिए किया जाता था। बुद्ध के जीवन, त्याग, करुणा और दया के संदेश चित्रों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाए जाते थे। धर्म ने चित्रकला को केवल सजावट का साधन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व प्रदान किया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

गुप्तकालीन चित्रकला का सांस्कृतिक महत्व– गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय संस्कृति का दर्पण है।

1. समाज की जीवन शैली को दर्शाती है।
2. धार्मिक विश्वासों को प्रकट करती है।
3. कला और संस्कृति के विकास को स्पष्ट करती है।
4. भारतीय सौंदर्यबोध का प्रतिनिधित्व करती है।

- चित्रों के माध्यम से उस समय की पोशाक, आभूषण, संगीत, नृत्य और सामाजिक संरचना की जानकारी मिलती है।

गुप्तकालीन चित्रकला का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन– गुप्तकालीन चित्रकला का मूल्यांकन करते समय यह स्पष्ट होता है कि यह केवल धार्मिक कला नहीं थी, बल्कि मानव जीवन की गहरी समझ का परिणाम थी।

सकारात्मक पक्ष

1. चित्रों में भावनात्मक अभिव्यक्ति अत्यंत प्रभावशाली है।
2. धार्मिक और सामाजिक जीवन का सुंदर चित्रण मिलता है।
3. प्राकृतिक रंगों का संतुलित प्रयोग किया गया।
4. चित्रों में सौंदर्य और यथार्थ का समन्वय है।
5. भारतीय चित्र परंपरा को वैश्विक पहचान मिली।

सीमाएँ

1. अधिकांश चित्र धार्मिक विषयों तक सीमित हैं।
2. आम जनता के जीवन का सीमित चित्रण मिलता है।
3. चित्रों का संरक्षण कठिन था, इसलिए कई चित्र नष्ट हो गए।

फिर भी, गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय कला इतिहास की सर्वोच्च उपलब्धियों में गिनी जाती है।

गुप्तकालीन चित्रकला का भारतीय कला पर प्रभाव– गुप्तकालीन चित्रकला ने भारतीय चित्र परंपरा को गहरा प्रभाव दिया।

1. मध्यकालीन चित्रकला की आधारशिला बनी।
2. मंदिर चित्रकला पर प्रभाव पड़ा।
3. राजस्थानी और पहाड़ी चित्र शैली पर अप्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है।
4. धार्मिक चित्रण की परंपरा मजबूत हुई।

गुप्तकालीन चित्रकला ने भारतीय कला को आध्यात्मिकता और सौंदर्य का नया आयाम दिया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण– गुप्तकालीन चित्रकला का अध्ययन केवल कलात्मक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि तुलनात्मक कला इतिहास के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि गुप्तकालीन चित्रकला की तुलना मौर्य, शुंग तथा कुषाणकालीन कला से की जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन चित्रों में भावनात्मक गहराई, सौंदर्यबोध और आध्यात्मिकता अधिक विकसित रूप में दिखाई देती है। मौर्यकालीन कला अधिकतर शासकीय शक्ति और राजकीय संरचनाओं से जुड़ी थी, जबकि गुप्तकालीन चित्रकला मानव जीवन के भावनात्मक और धार्मिक पक्ष को अभिव्यक्त करती है। कुषाणकालीन कला में यूनानी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, परंतु गुप्तकालीन चित्रकला पूर्णतः भारतीय सौंदर्य परंपरा पर आधारित थी। गुप्तकालीन चित्रकला में कलाकारों ने मानव शरीर की संरचना को केवल यथार्थ रूप में नहीं दर्शाया, बल्कि उसे आदर्शवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। चेहरे की कोमलता, आँखों की अभिव्यक्ति और शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से आध्यात्मिक भावनाओं को व्यक्त किया गया। आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो गुप्तकालीन चित्रकला का केंद्र धार्मिक जीवन था, जिसके कारण सामाजिक और आर्थिक जीवन के कुछ पक्ष अपेक्षाकृत कम चित्रित हुए। फिर भी, धार्मिक चित्रों के माध्यम से उस समय की संस्कृति, समाज और जीवनशैली का अध्ययन संभव हो जाता है।

कई विद्वानों का मानना है कि गुप्तकालीन चित्रकला ने भारतीय कला को एक मानक सौंदर्यशास्त्रीय रूप प्रदान किया। यह शैली आगे चलकर मध्यकालीन चित्रकला, मंदिर चित्रकला तथा राजदरबारी कला के विकास में प्रेरणास्रोत बनी।

शोध निष्कर्षों का संक्षिप्त सार

1. गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय चित्र परंपरा की परिपक्व अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है।
2. अजंता और बाघ गुफाएँ इस काल की प्रमुख चित्रकला परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं।
3. चित्रों में धार्मिकता, मानवीय संवेदना और सौंदर्यबोध का उत्कृष्ट समन्वय मिलता है।
4. प्राकृतिक रंगों और भित्तिचित्र तकनीक का उच्च स्तर पर प्रयोग किया गया।
5. गुप्तकालीन चित्रकला ने भारतीय कला की भावी परंपराओं को प्रभावित किया।

निष्कर्ष – गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय कला इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। यह चित्रकला केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक संरचना और मानवीय भावनाओं का भी प्रतिबिंब है। अजंता और बाघ गुफाओं की चित्रकला ने यह सिद्ध किया कि भारतीय कलाकारों में उच्च स्तर की तकनीकी दक्षता और सौंदर्यबोध मौजूद था।

गुप्तकालीन चित्रकला ने भारतीय कला को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। इसकी विशेषता यह है कि इसमें आध्यात्मिकता, यथार्थ, सौंदर्य और मानवीय संवेदना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

आज भी गुप्तकालीन चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य भाग है और कला इतिहास के विद्यार्थियों तथा शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

सन्दर्भ सूची–

1. शर्मा, रामशरण. प्राचीन भारत का इतिहास। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 04, April 2026

2. थापर, रोमिला. भारत का इतिहास। ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण. भारतीय कला का इतिहास।
4. उपाध्याय, भगवतशरण. भारतीय कला और संस्कृति।
5. पर्सी ब्राउन. Indian Painting
6. मजूमदार, आर.सी. Ancient India।
7. ए.एल. बाशम. The Wonder That Was Indi।
8. सिंह, उपेन्द्र. प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास।
9. नीलकंठ शास्त्री, के.ए. भारतीय संस्कृति का इतिहास।
10. याज्ञिक, के.सी. भारतीय चित्रकला का इतिहास।
11–मिश्र, विद्यानिवास. भारतीय संस्कृति और कला। लोकभारती प्रकाशन।
12–त्रिपाठी, राधाकुमुद मुखर्जी. प्राचीन भारत की संस्कृति।
13–चतुर्वेदी, गोविन्द. भारतीय चित्रकला का विकास। हिंदी ग्रंथ अकादमी।
14–शर्मा, ओमप्रकाश. भारतीय कला और स्थापत्य।
15–पाण्डेय, राजबली. भारतीय संस्कृति का इतिहास।
16–वर्मा, श्याम बिहारी. भारतीय चित्रकला परंपरा
17–गुप्ता, परमेश्वरीलाल. भारतीय कला का इतिहास।
18–तिवारी, शिवकुमार. भारतीय चित्रकलारू परंपरा और विकास।
19–द्विवेदी, हजारीप्रसाद. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।
20–सिंह, रामचन्द्र. गुप्तकालीन भारत और उसकी कला।